कुम्भपर्व एवं वर्तमान स्थिति : खण्ड १

कुम्भपर्व की महिमा

(कुम्भपर्वक्षेत्र एवं कुम्भमेलों की विशेषताओंसहित) (Hindi)

संकलनकर्ता

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवले, हिन्दू राष्ट्र-स्थापना के उद्घोषक

सद्गुरु डॉ. चारुदत्त पिंगळे

राष्ट्रीय मार्गदर्शक, हिन्दू जनजागृति समिति

सनातन संस्था

प्रकाशक : सनातन भारतीय संस्कृति संस्था, कक्ष क्र. १०३, सनातन आश्रम, सनातन संकुल, पोस्ट – 'ओएनजीसी', देवद, तहसील पनवेल, जनपद रायगड (महाराष्ट्र) ४१० २२१. **दू.क्र. :** (02143) 233120

प्रथम संस्करण : श्री बांकेबिहारी प्राकट्योत्सव, वृन्दावन (१७ दिसम्बर २०१२)
द्वितीय संस्करण : श्री गणेश चतुर्थी, कलियुग वर्ष ५११७ (१७ सितम्बर २०१५)
द्वितीय पुनर्मुद्रण : श्री गणेश चतुर्थी, कलियुग वर्ष ५१२६ (७ सितम्बर २०२४)

मूल मराठी ग्रन्थ 'कुम्भपर्वाचे माहात्म्य' का अनुवाद

मुद्रणस्थल : शिवम ऑफसेट, कोल्हापुर, महाराष्ट्र.

अर्पणमूल्य : ₹ ५०/- (₹ 50/-) ॐ **ग्रन्थ क्र.** : १९३

ISBN 978-81-973664-9-9

© **प्रकाशक** All rights are reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior written permission of the original publisher. Violators will be liable for criminal / civil action.

ग्रन्थ के संकलनकर्ताओं का परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजी के अद्वितीय कार्य का संक्षिप्त परिचय

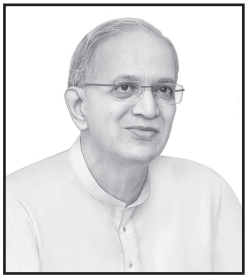

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था' की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्ति के लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्ग की निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधना से २६.७.२०२४ तक १२८ साधकों को सन्तत्व प्राप्त तथा १,०४० साधक सन्तत्व की दिशा में अग्रसर हैं ।

३. देवता, साधना, राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विषयों पर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिंदुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात' के संस्थापक-संपादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र की (ईश्वरीय राज्य की) स्थापना का उद्घोष (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र' की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन एवं उन्हें आध्यात्मिक स्तर पर दिशादर्शन !

७. भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रसार हेतु 'भारत गौरव पुरस्कार' देकर फ्रान्स के संसद में सम्मान (५ जून २०२४)

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का साधकों को आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ – जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

सद्गुरु डॉ. चारुदत्त पिंगळे, एमएस (ईएनटी)

'हिन्दू जनजागृति समिति' के राष्ट्रीय मार्गदर्शक हैं तथा भारत व नेपाल में हिन्दू राष्ट्र-स्थापना हेतु हिन्दू-संगठन कर रहे हैं । आपके नेतृत्वमें प्रतिवर्ष गोवामें 'अ.भा. हिन्दू अधिवेशन' आयोजित किया जाता है । आप सनातनके अनेक ग्रन्थोंके संकलनकर्ता भी हैं ।

अनुक्रमणिका

(कुछ विशेषतापूर्ण शीर्षक नीचे दिए हैं ।)

卐 **भूमिका** ७

卐 **प्रस्तावनात्मक विवेचन** ८

१. कुम्भपर्व से सम्बन्धित विभिन्न संज्ञाओं का अर्थ ९

२. ग्रहगणित के अनुसार चार कुम्भक्षेत्रों में होनेवाले कुम्भपर्व ११

३. कुम्भपर्वक्षेत्र एवं उनका माहात्म्य १३

३ अ. प्रयाग (इलाहाबाद) ३ आ. हरद्वार (हरिद्वार) १३

३ इ. उज्जैन ३ ई. त्र्यंबकेश्वर तथा नासिक २३

३ उ. दक्षिण भारत का कुम्भपर्व ३१

४. कुम्भपर्व का धार्मिक महत्त्व (पुण्यदायी, पापक्षालक, पितृतर्पण) ३१

५. कुम्भमेले की विशेषताएं ३४

५ आ. हिन्दुओं का विश्व का सबसे बडा धार्मिक पर्व ३४

५ ऐ. बिना किसी आर्थिक सहायता की अपेक्षा के आयोजित होनेवाला कुम्भपर्व ! ३७

५ औ. 'शाही स्नान' पर निकलनेवाली साधुओं की शोभायात्रा ३८

६. कुम्भमेले में सहभागी होनेवाले विभिन्न अखाडे ! ४२

६ आ. अखाडों की विशेषताएं ४३

६ उ. अखाडों द्वारा किया धर्मरक्षा का कार्य ४५

७. कुम्भमेले का आध्यात्मिक लाभ प्राप्त करें ! ४६

卐 प्रस्तुत ग्रन्थ की असामान्यता समझ लें ! ४७

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजी की उपाधिसम्बन्धी विवेचन !

महान महर्षियों ने सहस्रों वर्ष पहले नाडीपट्टिकाओं में भविष्य लिख रखा है । इन जीवनाडी-पट्टिकाओं के वाचन के माध्यम से महर्षि सनातन संस्था का मार्गदर्शन करते हैं । '१३.७.२०२२ से 'सप्तर्षि जीवनाडी-पट्टिका' के वाचन के माध्यम से सप्तर्षि की आज्ञा अनुसार परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी को 'सच्चिदानंद परब्रह्म' सम्बोधित किया जा रहा है । तब भी, इससे पहले के लेखन में अथवा अब भी साधकों द्वारा दिए लेखन में उन्होंने 'प.पू.' अथवा 'परात्पर गुरु' की उपाधियों से सम्बोधित किया हो, तो उसमें परिवर्तन नहीं किया गया है ।

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी की उत्तराधिकारिणियों की उपाधि सम्बन्धी विवेचन !

जीवनाडी-पट्टिका वाचन द्वारा सप्तर्षि ने की आज्ञा के अनुसार १३.५.२०२० से सद्गुरु (श्रीमती) बिंदा नीलेश सिंगबाळजी को 'श्रीसत्शक्ति' एवं सद्गुरु (श्रीमती) अंजली गाडगीळजी को 'श्रीचित्शक्ति' सम्बोधित किया जा रहा है।

सनातन की ग्रन्थसेवा में सम्मिलित होकर समष्टि साधना करें !

'मराठी भाषा के ग्रन्थों का संकलन करना; मराठी, हिन्दी एवं अंग्रेजी ग्रन्थों का विविध भाषाओं में अनुवाद करना एवं ग्रन्थों की संरचना 'इनडिजाइन' संगणकीय प्रणाली में करना, ग्रन्थों के मुखपृष्ठ बनाना एवं ग्रन्थछपाई सम्बन्धी करने योग्य सेवाएं' इन कार्यों में सम्मिलित होने हेतु सम्पर्क करें -

✆ (0832) 2312664 अथवा ✉ sankalak.goa@gmail.com

भूमिका

कुम्भमेला विश्व का सब से बडा धार्मिक पर्व है ! कुम्भमेला भारत की सांस्कृतिक महानता के केवल दर्शन ही नहीं, अपितु सन्तसंग प्रदान करनेवाला आध्यात्मिक सम्मेलन है । कुम्भपर्व के निमित्त प्रयाग, हरद्वार (हरिद्वार), उज्जैन एवं त्र्यंबकेश्वर-नासिक, इन चार क्षेत्रों में प्रति १२ वर्ष पश्चात सम्पन्न होनेवाले इस पर्व का हिन्दू जीवनदर्शन में महत्त्वपूर्ण स्थान है । कुम्भमेले की आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक महिमा अनन्य है । गुरुग्रह को राशिचक्र भोगने में १२ वर्ष की कालावधि लगती है, जिससे प्रत्येक १२ वर्षों के उपरान्त कुम्भयोग आता है । हिन्दू धर्म की दृष्टि से तीन बडे पर्व महत्त्वपूर्ण माने जाते हैं - गुरु के कुम्भ राशि में होने पर 'कुम्भपर्व, सिंह राशि में होने पर 'सिंहस्थ', कन्या राशि में होते हुए 'कन्यागत' । गंगास्नान, साधना, दानधर्म, पितृतर्पण, श्राद्धविधि, सन्तदर्शन, धर्मचर्चा जैसी धार्मिक कृति करने के लिए करोडों श्रद्धालु यहां आते हैं । यह श्रद्धालुओं का पर्व ही है । साथ ही, देवता, ऋषि, सन्त एवं तैंतीस करोड तीर्थ भी कुम्भपर्व में सम्मिलित होते हैं, जो एक अद्वितीय घटना है ।

'हिन्दू-एकता' कुम्भमेले की घोषणा है । कुम्भमेला हिन्दुओं के धार्मिक तथा सांस्कृतिक अमरत्व का प्रतीक है । विदेशी नागरिकों को, यह मेला हिन्दू धर्म के अन्तरंग के दर्शन कराता है । वास्तविक अर्थ में इस पर्व का आध्यात्मिक लाभ, कुम्भमेले में धर्मश्रद्धायुक्त आचरण करनेवाले श्रद्धालुओं को ही होता है । अतएव इस ग्रन्थ में मुख्यरूप से कुम्भमेले एवं कुम्भपर्वक्षेत्र की महिमा का विवेचन किया है ।

कुम्भपर्व स्थित देवताओं के चरणों में यही प्रार्थना है कि यह ग्रन्थ पढकर समस्त श्रद्धालु कुम्भपर्व का आध्यात्मिक लाभ ले पाएं !

- संकलनकर्ता

टिप्पणी : सनातन की सन्त पू. (श्रीमती) अंजली गाडगीळजी का लेखन 'एक विद्वान', 'गुरुतत्त्व' आदि नामों से प्रसिद्ध है ।